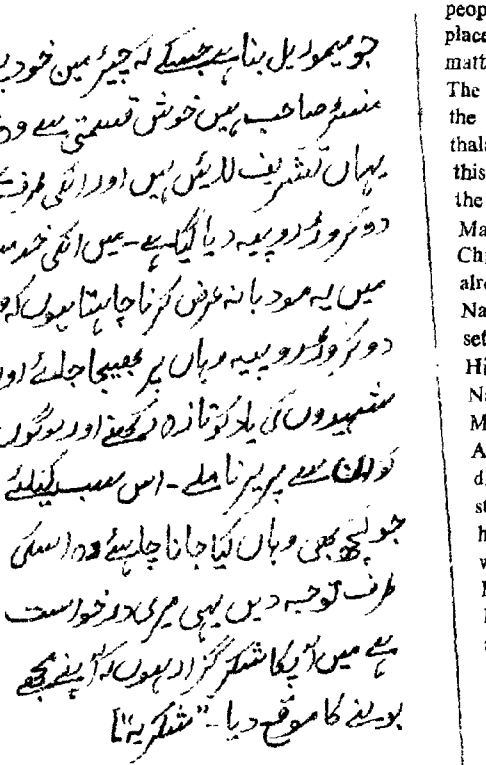

جو میموریل بنایا ہے جسکے لئے چیئرمین خود پرائم
منسٹر صاحب ہیں خوش قسمتی سے وہ بھی
یہاں تشریف لائے ہیں اور انکی طرف سے
دو کروڑ روپیہ دیا گیا ہے - میں انکی خدمت
میں یہ مودبانہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ وہ
دو کروڑ روپیہ وہاں پر بھیجا جائے اور
شہیدوں کی یاد کو تازہ رکھنے اور لوگوں
کو لال سے پریرنا ملے - اس سب کیلئے
جو کچھ بھی وہاں کیا جانا چاہیئے وہ اسکی
طرف توجہ دیں یہی میری درخواست
ہے میں آپکا شکر گزار ہوں کہ آپنے مجھے
بولنے کا موقع دیا - "شکریہ"[]

[The Deputy Chairman in the Chair]

Request for Setting up a bench of the Madras Hıgh Court at Madurai.

SHRI S. MUTHU MANI (Tamil Nadu): Madam Deputy Chairman, I thank you for giving me this opportunity to speak. Madam, the setting up of a Bench of the hon'ble High Court of Madras at Madurai is very, very important for the people of Madurai district as also for the people belonging to seven southern districts of Tamil Nadu. In the absence of a Bench of the Madras High Court at Madurai, the central place of seven southern districts, the people of Madurai and the people from these seven districts have to travel 500 kms to 750 kms to seek justice from the High Court at Madras. Since I am a member of the Madurai Bar Association, I know in depth the difficulties being faced by the people to get justice from such a distant place and in this context, I raised the matter in this august House on 10.3.1993 The Tamil Nadu Government, under the dynamic leadership of Dr. Puratchithalaivi has sanctioned Rs. ten crores for this purpose and is very keen to have the Bench of the Madras High Court at Madurai at the earliest. Our hon'ble Chief Minister Dr. Puratechithaloivi, has already made the intention of the Tamil Nadu Government clear with regard to setting up of a Bench of the Madras High Court at Madurai in the Tamil Nadu Assembly. The members of the Madurai Bar Association and other Bar Associations of all the seven southern districts of Tamil Nadu have been on strike for the last three months and they have been pressing this demand. All the welfare organisations functioning in Mudurai and in all the seven districts have also joined the striking lawyers and have also extended their full support in this regard. A report of the three senior judges on the above subject be expedited to pave the way for the creation of a Bench of the Madras High Court at Madurai and the Central Government should take immediate action in this respect before the situation goes out of hand. The people of Tamil Nadu will not tolerate the discrimination being meted out to them by the Central Government. They cannot tolerate this thing. The Central Government honoured the sentiments of the people of other States who have come up with similar demands by setting up Benches of the High Courts in other States. Then why is the State of Tamil Nadu discriminated against? I urge upon the Government to take steps on a war-footing to set up the said Bench at Madurai as demanded by the Hon'ble Chief Minister of Tamil Nadu. Thank you.

SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI (Tamil Nadu): Madam, since 1969, the people of Tamil Nadu have been making this demand. Even twenty days before, Mr. Venkatraman had raised this issue, but we could not get any reply. I hope the Government will take action.

†[] Translation in Arabic script.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Law Minister is here and to heard it.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश) : माननीया उपसभापति महोदया, मैं प्रस्ताव करता हूं कि राष्ट्रपति के प्रति इस रूप में कृतज्ञता ज्ञापित की जाए :—

"राष्ट्रपति ने 13 फरवरी, 1995 को संसद् की दोनों सभाओं की सम्मिलित बैठक में कृपया जो भाषण दिया है, उसके लिए राज्य सभा के सदस्य, जो सभा के वर्तमान सत्र में उपस्थित हैं, राष्ट्रपति के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।"

महोदया, मैं अपनी बात महामहिम राष्ट्रपति जी के गतवर्ष के अभिभाषण के पैरा 2 से प्रारम्भ करना चाहूंगा जिसमें उन्होंने कहा था कि :—

"आज देश का परिप्रेक्ष्य विगत वर्ष की तुलना में बदला हुआ है। वर्ष 1993 के शुरू में हमारे सामने अनेक कठिनाईयां आयीं, लेकिन जैसे-जैसे यह वर्ष बीतता गया, हमारे नागरिकों ने अत्यधिक स्वस्थ प्रतिक्रिया अपनायी और 1993 का वर्ष समाप्त होते-होते निश्चित ही आशा की किरण सामने दिखाई देने लगी। सभी मोर्चों पर निरंतर प्रगति हुई, जिसका आभास कानून तथा व्यवस्था की सुधरती हुई स्थिति, खाद्यान्नों का रिकार्ड उत्पादन, खरीद के अभूतपूर्व स्तर, खाद्यान्नों के बहुत बड़े भंडार, मुद्रास्फीति को एकल अंकीय स्तर पर बनाए रखने, विदेशी मुद्रा के संतोषजनक भंडार, व्यापारिक घाटे में पर्याप्त कमी, निर्यात में वृद्धि, मूलभूत संरचना के कुछ आवश्यक क्षेत्रों के कार्य-निष्पादन में सुधार और प्रत्यक्ष तथा पोर्टफोलिया, दोनों में अधिक विदेशी पूंजी निवेश से मिलता है। ये सभी हमारे उभरते हुए आशावाद के प्रतीक हैं और उसके औचित्य को सिद्ध करते हैं। हमने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी ऊर्जा को और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने विश्वास को फिर से प्राप्त कर लिया है। हमारे पास इस सर्वतोमुखी उपलब्धि पर संतुष्टि महसूस करने का कारण है और इसका प्रमाण है। लेकिन हमने अपने सामाजिक और आर्थिक विकास के जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं, उन्हें प्राप्त करने के लिए हमें अभी बहुत कुछ करना है"

यह गतवर्ष महामहिम राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में उल्लेख किया था और मुझे प्रसन्नता है कि इस वर्ष जो उन्होंने अपना अभिभाषण दिया है, उन्होंने संतोष जाहिर किया है और मैं उनके कथन को उद्धृत करना चाहूंगा, जो पैरा 2 में इस प्रकार है :—

"पिछले वर्ष की हमारी आशावादिता और विश्वास सही सिद्ध हुए हैं। हमारी परिकल्पनाएं काफी हद तक साकार हुई हैं और अब यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि सरकार की नई आर्थिक और अन्य नीतियों के फलस्वरूप देश में अपेक्षित बदलाव आने लगा है। जनता से सामाजिक स्थिरता के प्रति अपना विश्वास खुलकर व्यक्त किया है राजनीतिक दलों ने भी लोकतन्त्र को तथा विधि-सम्मत शासन जैसे मूलभूत मूल्यों को सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिए अपना योगदान दिया है। हमारे देश ने विश्व-समाज में अपनी स्थिति को बेहतर बनाया है तथा अब हमारी अर्थव्यवस्था संसार में तेजी से विकसित हो रही एक अर्थव्यवस्था के रूप में उभरकर सामने आ रही है।"

महोदया, इस बात के लिए निश्चित रूप से हमारे प्रधान मंत्री श्री नरसिंह राव जी और उनकी सरकार बधाई की पात्र हैं, जिन भावनाओं का उल्लेख महामहिम राष्ट्रपति ने अपने अभिभाषण में किया है। साथ ही महामहिम राष्ट्रपति ने अपने अभिभाषण के अन्त में हमसे कुछ अपेक्षाएं भी की हैं, मैं उनको भी उद्धृत करना चाहूंगा, पैरा 49 और 50 में उन्होंने कहा है :—

"हमारे आर्थिक प्रबंधों की सफलता: जिस पर हमारे देशवासियों की